

स्म व्यस्न

व्यवहार व्यसन

अंब्री आदत को व्यसन कहते हैं

निश्चय व्यसन

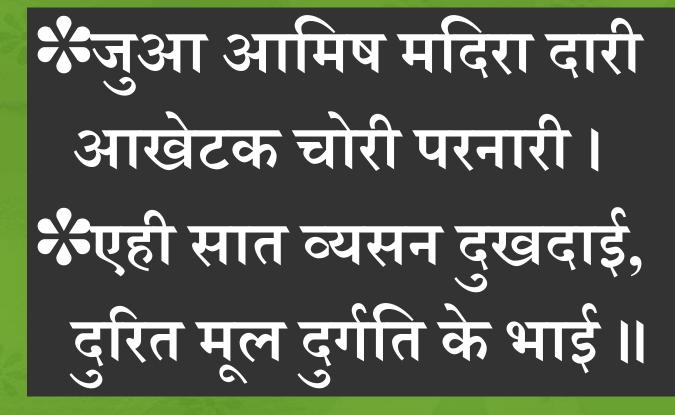
अात्मा के स्वरूप को भूला दे, वे मिश्यात्व से युक्त राग-द्वेष परिणाम

ज्यसन स क्या नकसान हैं?

र्अंजीव में आकुलता पैदा करते देंदुराचारी बनाते

दर्वित ये सातों व्यसन, दुराचार दुखधाम। भावित अंतर-कल्पना, मृषा मोह परिणाम॥





7 व्यसन के नाम

चोरी करना

प्रस्त्री सेवन

शिकार

जुआ

वेश्या गमन मांस भक्षण

मदिरा पान

द्रव्य जुआ

- क्षिहार जीत पर दृष्टि रखते हुए
 - रुपये पैसे, या
 - किसी प्रकार के धन से खेल खेलना
- अशर्त लगाकर कोई काम करना
- देवंव लगाकर अधिक लाभ की आशा या

हानि का भय होना

जुए से हानि

- देशन, इज्जत आदि की तो हानि होती ही है
- अाकुलता बढ़ती है
- र्मन अस्थिर होने से कोई धार्मिक व लौकिक कार्य नहीं हो पाते हैं
- दिसादि में पाप प्रवृत्ति सहज होने लगती है

भावजुआ

अशुभ में हार शुभ में जीत यहै द्यूत कर्म।



द्रव्य मांस-भक्षण

देभार कर या मरे हुए जीव का कलेवर खाना

मांस भक्षण से हानि

अनेक बीमारियाँ होती

भाव मांस-भक्षण

देह की मगनताई, यहै माँस भिखबो॥



द्रव्य मदिरा पान



श्वाराब, भांग, चरस, गांजा आदि नशीली वस्तुओं का सेवन करना



असमाज में बुरा समझा जाता अबुद्धि हित-अहित के विचार से रहित होती

भाव मदिरा पान

मोह की गहल सों अजान यहै सुरापान



आत्म स्वरूप से अनजान रहना

मैं कौन हूँ - ये खबर नहीं होना

द्रव्य वेश्या गमन





असमाज में बुरा समझा जाता

%आकुलता होती

द्भिपर भव बिगड़ता

भाव वेश्या गमन

कुमित की रीति गणिका को रस चिखबो



विषय-कषाय में बुद्धि रमाना

द्रव्य शिकार

देजंगल में स्वच्छंद फिरने वाले जानवरों देव छोटे-छोटे पक्षियों को निर्दय होकर देनिकसी भी हथियार से मारना देव मारकर आनन्दित होना

शिकार से हानि

- अपर के प्रति दया परिणाम नष्ट होता
- द्धिपर्यावरण का संतुलन बिगडता

भाव शिकार

निर्दय है प्राण-घात करबो यहै शिकार

तीव्र राग वश ऐसे कार्य करने के भावों द्वारा

अपने चैतन्य प्राणों का घात करना

द्रव्य परश्री सेवन

अपनी विवाहिता स्त्री के अलावा शिष अन्य किसी भी स्त्री के साथ रमण करना

परस्त्री सेवन से

- %आकुलता होती
- समन अस्थिर होने से कोई
 - धार्मिक व लौकिक कार्य नहीं हो

पाते

भाव परश्री सेवन

पर-नारी संग पर-बुद्धी को परिखबो॥

दूसरों की बुद्धि की परख में

ज्ञान का सदुपयोग मानना

द्रव्य चोरी

- अपाद से बिना दी हुई
- दिकिसी वस्तु को ग्रहण करना
 - चोरी से हानि
- क्ष्मय बना रहता
- **%**तनावग्रस्त
- %अस्थिर चित्त

भाव चोरी सेवन

प्यार सौं पराई सौंज गहिबे की चाह चोरी।



पर वस्तु से साझेदारी की चाह, अपनी मनना

स्याग क्रम



%फिर %भाव व्यसन **%**आत्म रुचि से आत्म स्वभाव की वृद्धि में आनंदित होने से सहज छूटते